समकालीन कविता का विकास और शिल्प

(जनपद शाहजहाँपुर के विशेष सन्दर्भ में)

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

समकालीन कविता का विकास और शिल्प

(जनपद शाहजहाँपुर के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955 & 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

समकालीन कविता का विकास और शिल्प
(जनपद शाहजहाँपुर के विशेष सन्दर्भ में)

संस्करण : 2018
© लेखक
ISBN: 978-81-939342-1-0

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के द्वारा प्रकाशित।

पुरोवाक्

भावप्रवणता, कल्पनाशीलता तथा श्रद्धाभावनादि प्रवृत्तियों से मुक्त होकर समय के अन्तर्द्वन्द्वों और अन्तर्विरोधों को अपने में समाहित करता हुआ कवि जब काव्य रचना में प्रवृत्त होता है तब वह समकालीन कविता का कवि होता है। कविता के विभिन्न नाम और रूपों के संसार में आज 'समकालीन कविता' भी एक प्रतिष्ठित नाम है।

साहित्य के क्षेत्र में शाहजहाँपुर की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। भुवनेश्वर और हृदयेश क्रमशः नाटक और कहानी के क्षेत्र में जाने -पहचाने नाम हैं। इसके अतिरिक्त हिन्दी कविता भी शाहजहाँपुर में खूब फली-फूली है। कविता के प्रायः प्रत्येक रूप को यहाँ के कवि ने वाणी दी है। डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री का प्रस्तुत ग्रन्थ शाहजहाँपुर की समकालीन हिन्दी कविता की व्याख्या-समीक्षा प्रस्तुत करता है।

किसी भी रचना का मूल्यांकन रचनाकार की दृष्टि और सामर्थ्य की अपेक्षा रखता है। डॉ. प्रशान्त की दृष्टि निर्भ्रम है और सामर्थ्य का आकलन इस अकेली बात से ही सिद्ध है कि लगभग तीन सौ पृष्ठों के इस ग्रन्थ में एक ही कवि भिन्न-भिन्न स्थानों या वर्गों में उद्धृत होने पर भी वस्तु या विषय की पुनरूक्ति नहीं है।

पुस्तक का प्रथम अध्याय 'प्रस्तावना' है। यह अध्याय सम्पूर्ण विवेचन को आधार या मापदण्ड प्रदान करता है। समकालीनता की व्याख्या करते हुए उसकी प्रमुख धाराओं और प्रमुख विषयवस्तुओं का विवेचन करते हुए लेखक ने प्रगतिशीलता को दृष्टि में रखते हुए समकालीन आन्दोलन की सहज और सुखकर व्याख्या की है। लगभग अस्सी पृष्ठों की यह प्रस्तावना स्वयम् में एक ग्रन्थ है जिसमें डॉ. प्रशान्त के श्रम और उनकी मेधा का सहज साक्षात्कार होता है।

पुस्तक के शेष पाँच अध्याय शाहजहाँपुर के उन कवियों से सम्बन्धित हैं जो समकालीन हिन्दी कविता के कवि हैं। बड़े श्रम के साथ लेखक ने दशक के क्रम से कवियों की कविता-यात्रा को सजाया है। प्रमुख कवियों के जीवनवृत्त को संक्षिप्त

रूप में संकलित करते हुए उनके भाव पक्ष और कला पक्ष को पैनी दृष्टि से विवेचित किया है।

पुस्तक यथार्थतः शाहजहाँपुर की समकालीन हिन्दी कविता का ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसको डॉ. प्रशान्त ने असीम धैर्य, निष्ठा और श्रम से तैयार किया है, अपनी प्रखर मेधा और आलोचक के लिए अनिवार्य निभ्रान्त दृष्टि के बल पर।

मैं पुस्तक के सफल प्रचार और प्रसार की हृदय से कामना करता हूँ अपनी एक और कामना के साथ कि शाहजहाँपुर की समकालीन उर्दू कविता पर भी कोई इसी प्रकार का शोधग्रन्थ किसी उर्दू मनीषी द्वारा इस पुस्तक से प्रेरित होकर आना चाहिए।

आचार्य भिक्खु मोग्गलायन

नमूना • SAMPLE

प्राक्कथन

कविता मानवीय अनुभूतियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति होती है। कवि अपनी कविता में अभिव्यक्ति की सम्पूर्ण सृष्टि, भाव और कला शिल्प के माध्यम से करता है। परिवेश के प्रभाव के चलते जब कवि की सम्वेदना उद्वेलित होती है तब कवि की अन्तःचेतना यह निर्णय करती है कि यह अनुभूति किस रुप में अभिव्यक्ति पायेगी।

अनुभूति के विषय जहाँ परिवेश की सृष्टि होते हैं और कविता का भाव-शिल्प बनते हैं, वहीं अभिव्यक्ति का स्वरुप कला शिल्प के रुप में अनगढ़ भाव को सौन्दर्य और समृद्धि प्रदान करता है। इस सन्दर्भ में परिवेश वह महत्वपूर्ण तत्व है जो कविता के भाव और कला दोनों पक्षों को प्रभावित करता है। समय के सापेक्ष कविता का आनुभूतिक भाव चेतना और अभिव्यक्ति का ढंग दोनों बदलते रहते हैं। यह एक स्वयं सिद्ध तथ्य है।

यदि हम हिन्दी कविता के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हम देखेंगे कि जैसे-जैसे परिवेश के फलक पर ऐतिहासिक और सामाजिक परिवर्तन होते रहे, वैसे-वैसे कविता का स्वरुप और शिल्प भी उस परिवर्तन का सहगामी बनता रहा है। समकालीन कविता के अभ्युदय में भी परिवेश का यही प्रभाव दृष्टिगत होता है। कवि की आनुभूतिक पकड़ और वैचारिक दृष्टि बहुत पीछे से जीवन परिस्थितियों की जड़ों और सम्भावित कल को टटोलते हुये अपनी वर्तमानता का निर्धारण कर पाती है, यही निर्धारण कविता की बुनावट बनता है। यह बुनावट अन्तर्दशा के रुप में युग विशेष की काव्य प्रवृत्ति का निर्माण करती है और इस प्रकार समकालीनता का काल के संदर्भ में विस्तार होता है। इस प्रकार तात्कालिकता पीछे छूटती जाती

SAMPLE

है और समकालीनता कदम दर कदम आगे बढ़ती है। आजादी के बाद सपनों का भंग होना, आर्थिक नीतियों की असफलता, अहिंसा और पंचशील के लचर सिद्धान्त, गुलाम भारत में संविधान पर आधारित भारतीय गणतंत्र का निर्मित संविधान, समाज की यथास्थितिवादिता, सन् 1962 में चीन का आक्रमण, भारत की शर्मनाक पराजय, बहुत से अकाल, जन असंतोष, क्रूर दमन-चक्र, बुद्धिजीवियों का आत्मपरायापन और उदासीनता, भ्रष्टाचार, इन्दिरा गांधी का तथाकथित अनुशासन पर्व, साम्प्रदायिकता का ताण्डव, उदारीकरण, पूँजी के बढ़ते प्रभाव और बाजारवाद आदि वे बीहड़ और खतरनाक तात्कालिक संदर्भ हैं, जिन्हें समकालीन कविता समेटती है। यद्यपि यह भाव युगबोध की परिणति होते हैं, तथापि स्थानिकता के आधार पर इनकी अभिव्यक्ति में स्पष्ट अन्तर दिखाई देता है क्योंकि कोई भी सम्पूर्ण संकल्पना दो तत्वों काल और स्थान के संदर्भ में ही रूपायित होती है। किसी एक छोटे शहर में एक काल खण्ड में रची गयी रचनायें भले ही वैचारिक दृष्टि से देश की रचनायें हों तथापि उनमें स्थानिकता के वैभिन्य का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यही बात शाहजहाँपुर जनपद की समकालीन कविता के संदर्भ में भी सत्य है। इन रचनाओं का अवदान हिन्दी साहित्य के लिये कहीं से भी कमतर नहीं है। यह अलग बात है कि यह अवदान अनुसंधानों के अभाव में महत्व नहीं पा सका। ऐसे ही विचार से अनुप्राणित मैंने शाहजहाँपुर जनपद में सृजित समकालीन कविता को अपने अनुसंधान का विषय बनाने का विचार किया।

इसके पीछे छोटे जनपद में लिखी जा रही समकालीन कविता को सामने लाना था। यह अपने आप में एक जटिल कार्य था। एक तो बिखरा कविता साहित्य और काल की दीर्घावधि के बीच टूटी अनाम कड़ियाँ सबसे बड़ी बाधायें थीं। इस विस्तृत बिखराव और लयभंगता को समेटना और पुनः जोड़ना काफी हद तक जटिल और दुरूह कार्य था। इस कार्य में मैं कहाँ तक सफल हो सका इसका निर्णय आपका मन-मानस करेगा। यहाँ पर एक बात उल्लेखनीय है कि कविता के स्वरूप की वैविध्यता और विस्तार की दृष्टि से समकालीन कविता के अध्ययन में केवल मुक्त छन्द कविता को ही शामिल किया गया है।

यह पुस्तक बड़ों के आशीष, मित्रों की शुभकामनाओं और छोटों की सद्इच्छाओं की मिश्रित परिणति है। मेरे गुरु श्रद्धेय डॉ. सूर्यप्रकाश अग्निहोत्री (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, स्वामी शुकदेवानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, शाहजहाँपुर) और आचार्य नित्यानन्द मुद्गल की सद्प्रेरणायें और परामर्श इस पथ का पाथेय बने हैं,

मैं उन्हें उनके आशीषों की सतत् छाया के लिए कोटिशः प्रणाम करता हूँ।

सभी कवि मित्रों व उनके परिजनों का भी आभार हृदय से आभार ज्ञापित करता हूँ कि उन्होंने मूल साहित्यिक धरोहरों को मुझ अकिंचन के हाथ सौंपने में तनिक भी हिचक नहीं दिखाई। विशेष रूप से अग्रज कवि सुशील 'विचित्र' के अमूल्य सहयोग के लिए मैं आजीवन उनका ऋणी रहूँगा।

अपने परिजनों के स्नेह, प्रेम और सहयोग का आभार कृतज्ञता के किन्हीं भी शब्दों से ज्ञापित नहीं हो सकता। पूज्यनीय पिता श्री संतोष शरण अग्निहोत्री एवं स्नेहमयी माता श्रीमती जया अग्निहोत्री की अनुपम प्रेरणा, संरक्षण और अगाध स्नेह शब्द सामर्थ्य की सीमा से परे हैं। स्नेहिल पत्नी श्रीमती नीलम अग्निहोत्री और प्यारे पुत्र अग्निज उपमन्यु ने प्रेमपूर्ण प्रोत्साहन और सहयोग सतत् प्रदान किया, हृदय की अछोर गहराइयों से उनका भी आभार।

मैं उन सभी साहित्यकारों और विद्वानों का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस ग्रन्थ को पूर्ण करने में सहयोग किया।

हिन्दी दिवस
14 सितम्बर, 2018
शाहजहाँपुर, उ.प्र.

डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

अनुक्रमणिका

	पुरोवाक्	5
	प्राक्कथन एवं आभार प्रदर्शन	7
अध्याय प्रथम : प्रस्तावना		15-77
1.1	समकालीनता, तात्कालिकता और कविता	15
1.2	समकालीन कविता नामकरण, अर्थ एवं स्वरुप	25
1.3	समकालीन आन्दोलन- उद्‌भव और विकास	35
1.4	समकालीन कविता का यथार्थ- राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक परिवेश	58
1.5	समकालीन कविता का वैचारिक पक्ष (आधुनिकता बनाम समकालीनता)	62
1.6	नई कविता और समकालीन कविता	68
1.7	समकालीन कविता का अस्तित्ववादी दर्शन	70
1.8	समाहार	73
अध्याय द्वितीय : शाहजहाँपुर में समकालीन कविता की अन्तर्यात्रा		**78-136**
2.1	सातवाँ दशक प्रारम्भ से 1970 तक	79
2.2	आठवाँ दशक 1971 से 1980 तक	89
2.3	नवां दशक 1981 से 1990 तक	101
2.4	अंतिम दशक 1991 से 2000 तक	112
2.5	नई सदी 2001 से अब तक	118
2.6	समाहार	131

SAMPLE

अध्याय तृतीय : समकालीन कविता के चर्चित हस्ताक्षर 137-163

3.1 डॉ. शान्ति सेठ, 3.2 राम किशोर कपूर, 3.3 श्रीमती राजी सेठ,
3.4 आचार्य भिक्खु मोग्गलायन, 3.5 राजेन्द्र च्यवन, 3.6 अचल वाजपेयी,
3.7 डॉ. गिरिजानन्दन त्रिगुणायत 'आकुल', 3.8 ओम प्रकाश 'अडिग',
3.9 चन्द्रमोहन 'दिनेश', 3.10 महेश सक्सेना, 3.11 दिनेश रस्तोगी,
3.12 क्रान्ति गुप्त 'मतवाला', 3.13 राघवेन्द्र मिश्र 'अनावृत', 3.14 अजय गुप्त,
3.15 श्याम किशोर, 3.16 डॉ. राजकुमार शर्मा, 3.17 अरुण 'धीरज',
3.18 दीपक कन्दर्प, 3.19 बृजेश मिश्र, 3.20 उमेश चन्द्र सिंह,
3.21 अरविन्द मिश्र, 3.22 कमल 'मानव' 3.23 डॉ. राजीव पाण्डेय,
3.24 सुशील दीक्षित 'विचित्र' 3.25 ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान',
3.26 पंकज मिश्र 'अटल', 3.27 डॉ. प्रशान्त अग्निहोत्री
3.28 समाहार 162

अध्याय चतुर्थ : शाहजहाँपुर की समकालीन कविता का भाव शिल्प 164-218

4.1 चिन्तात्मक काव्य परिणति 165
4.2 व्यवस्था की परिभाषाहीनता 170
4.3 स्वप्न भंग 172
4.4 यथार्थ का अहसास 176
4.5 परिवर्तन के प्रति प्रतिबद्धता 183
4.6 अनिश्चय 190
4.7 विकल्पहीनता 193
4.8 अकेलेपन का मनःस्ताप 196
4.9 आस्था की निस्सारता 199
4.10 आस्था की सार्थकता 202
4.11 सामाजिक सम्बन्धों के प्रति दृष्टि 203
4.12 नगर बोध 205
4.13 आम आदमी की पक्षधरता 210
4.14 प्रेम की सूक्ष्म अनुभूति 215
4.15 समाहार 217

अध्याय पंचम : शाहजहाँपुर की समकालीन कविता का काव्य शिल्प 219-279

5.1 शैली 219

SAMPLE

5.2 बिम्ब विधान 237
5.3 प्रतीक विधान 249
5.4 छंद विधान 258
5.5 भाषा और शब्द विधान 266
5.6 अलंकार विधान 272
5.7 समाहार 278

अध्याय षष्ठम : उपसंहार **280-290**

6.1 जनपद शाहजहाँपुर में समकालीन कविता : उपलब्धि और संभावनायें 280

परिशिष्ट

'क' : संदर्भ ग्रन्थ सूची 291
'ख' : समकालीन कविता के प्रमुख हस्ताक्षर 301

नमूना • SAMPLE